सम्राट हर्षवर्धन

B.A. Part-II
Paper-III

शासन-प्रबन्ध

हर्षवर्धन प्राचीन भारतीय इतिहास का अंतिम हिन्दू सम्राट था। उसने गुप्तवंश के पतन के पश्चात् पुनः संपूर्ण भारत को संगठित कर राजनीतिक एकता स्थापित की।

सम्राट हर्ष की गणना प्राचीन भारत के महान सम्राटों में की जाती है। वह एक महान विजेता, धर्मसहिष्णु शासक, बौद्ध धर्म का संरक्षक और उच्चकोटि का शासन प्रबन्ध था।

हर्ष के शासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक था। केंद्रीय शासन में सम्राट का स्थान सर्वोपरि था। वही सेना का प्रधान और सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। प्रजा का कल्याण उसका मुख्य उद्देश्य था। सम्राट की सहायता के लिए अनेक मंत्री एवं सचिव होते थे। मंत्रिपरिषद के निर्णय को मानने हेतु सम्राट बाध्य नहीं था।

साम्राज्य की विशालता के कारण, प्रशासकीय सुविधा हेतु उसे प्रांतों में विभाजित किया गया। प्रत्येक प्रांत अनेक विषय (जिलों) में विभाजित था। शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी। हर्ष के पास एक विशाल सेना थी।

हर्ष भारत के महान शासकों में से एक था। संपूर्ण उत्तरी भारत में हर्षवर्धन का सुदृढ़ राज्य था। वह महान विजेता तथा कुशल प्रशासक था। हर्ष की शासन व्यवस्था उत्तम प्रकार की थी।

Dr. Umesh Kumar Rai
Dept. of History
S.B. College, Ara